SUCCESS STORY

OF

Support to Landless Farmers

राष्ट्रीय कृषि विकास के योजनान्तर्गत श्री हरिराम पुत्र श्री लालजी, ग्राम तिपरपुर, जनपद देहरादून की सफलता की कहानी

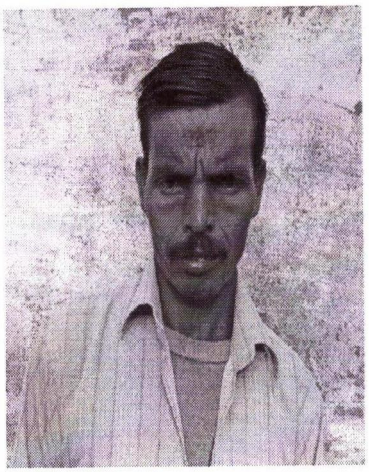

1-Background & Objective- उत्तराखण्ड राज्य में सन 1950 के दशक से रेशम उत्पादन का कार्य कृषको /कीटपालको द्वारा किया जा रहा है । ग्यारवीं एवं बारवीं पंचवर्षीय योजना में केन्द्रपोषित योजना (कैटेलिटिक डेवलपमेंट प्रोग्राम) का संचालन हुआ, जिसके अन्तर्गत ऐसे कृषको को लाभान्वित किया गया जिनके पास अपने स्वयं की भूमि थी । कृषको की भूमि की मेढों पर 300 शहतूत पौधौ का वृक्षारोपण कराया गया, जिससे योजना फलीभूत हुई । प्रदेश में रेशम कोया उत्पादन में कुछ भूमि हीन कीटपालक भी जुडे हुये थे जिनको उक्त योजना से लाभान्वित नही किया जा सका । राष्ट्रीय कृषि विकास योजना का मुख्य उददेश्य भूमि हीन कीटपालको को कीटपालन कक्ष निर्माण हेतु राजकीय सहायता एवं कीटपालन उपकरण उपलब्ध कराते हुये उनकी आय मे वृद्धि करना, फलस्वरूप उनके जीवन स्तर मे वृद्धि करना ही मुख्य लक्ष्य था । पूर्व में लाभार्थी एक ही घर मे रहने के साथ–साथ रेशम कीटपालन का कार्य भी करते थे जिससे कीटपालको की कीटपालन क्षमता मे वृद्धि नही हो सकी , योजना के सफल कियान्वयन स्वरूप ही कृषको की आय में आशातीत वृद्धि सम्भव हुयी ।

2– Intervention- वर्ष 2012–13 में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना प्रदेश मे लागू की गई एवं कीटपालको को कीटपालन कक्ष निर्माण हेतु आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के साथ–साथ कीटपालन उपकरण (रैक, रीयरिंग ट्रेज, माउन्टेज) उपलब्ध कराये गये ।

3– Outcome- राष्ट्रीय कृषि विकास योजना प्रदेश में लागू होने के उपरान्त भूमिहीन रेशम कीटपालको की कीटपालन क्षमता मे तीन गुना तक वृद्धि के साथ–साथ कीटपालको की आय में आशातीत वृद्धि के फलस्वरूप कीटपालको के जीवन स्तर मे अपेक्षित सुधार हुआ है ।

4– Case Study- श्री हरिराम ग्राम तिपरपुर, तहसील विकासनगर, देहरादून का रहने वाला है जो पिछले पन्द्रह वर्षो से रेशम कीट पालन का कार्य करते आ रहें है एवं इनकी शैक्षिक योग्यता कक्षा आठ पास है तथा भूमिहीन रेशम कीटपालक है। इनके पास मात्र रहने के लिए ही लगभग आधा बीघा जमीन है इसी में इनके द्वारा 25 शहतूत पौध भी लगाये गये है जिसकी पत्तियों का उपयोग इनके द्वारा रेशम कीटपालन में किया जाता है। शेष पत्तियों की व्यवस्था श्री हरि राम द्वारा अन्य कृषको से पत्ती क्रय करके की जाती है। जिस पर वर्ष भर में लगभग रु0 2000 का व्यय इनके द्वारा किया जाता है। इस क्षेत्र में ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के अर्न्तगत केन्द्रपाषित कैटेलिटिक डेवलपमेंन्ट प्रोग्राम योजना विभाग द्वारा कियान्वित की गयी, जिसके अन्तर्गत कृषको को अपनी निजी कृषि भूमि की मेडो पर 8'X8' की दूरी पर 300 शहतूत पौध रोपण कराकर योजना के अर्न्तगत कीटपालन उपकरण इत्यादि उपलब्ध कराये गये परन्तु उक्त योजना मात्र ऐसे कृषकों के लिए थी, जिनके पास अपनी निजी भूमि उपलब्ध हो। इस प्रकार उक्त लाभार्थी को सी0डी0पी0 योजना के अर्न्तगत लाभान्वित नहीं किया जा सका। ऐसे भूमिहीन कीटपालको के लिए विभाग द्वारा वर्ष 2012–13 में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अन्तर्गत योजना का संचालन हुआ ताकि भूमिहीन कीटपालकों की आय में भी वृद्धि करते हुऐ उन्हें लाभान्वित किया जा सकें। श्री हरि राम जिनके पास पूर्व में एक ही रहने का घर था और इसमें रहने के साथ–साथ कीटपालन का कार्य भी किया जाता था, जनपद देहरादून में वर्ष 2012–13 मे राष्ट्रीय कृषि विकास योजना लागू की गयी उक्त योजना के अन्तर्गत श्री हरि राम को कीटपालन कक्ष निर्माण हेतु सहायता उपलब्ध करायी गयी एवं कीटपालन उपकरण (ट्रे,रैक इत्यादि) उपलब्ध करायी गयी जिसके उपरान्त राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अर्न्तगत निर्मित कीटपालन भवन में कीटपालन कार्य किया गया जिससे इनकी कीटपालन क्षमता के साथ–साथ आमदनी में भी वृद्वि हुई है।

क0स0	पूर्व में कीटपालन क्षमता (वर्ष 2012–13)	पूर्व में कीटपालन से आय (वर्ष 2012–13)	वर्तमान कीटपालन क्षमता (वर्ष 2015–16)	वर्तमान आय (वर्ष 2015–16)
1	50 डीएफ एल्स	5500/–	150 डीएफ एल्स	16300/–

इस प्रकार राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अर्न्तगत श्री हरि राम ने कीटपालन कक्ष भवन का निर्माण करने तथा कीटपालन उपकरण की आपूर्ती के बाद कीटपालन कार्यकर इनकी आमदनी में तीन गुनी वृद्वि हुई है जिससे उनके जीवन स्तर में अपेक्षित सुधार हुआ है। यह अतिरिक्त आमदनी उनकी आजिविका को चलाने में सहायक सिद्ध हुई है।

5- Photographs-

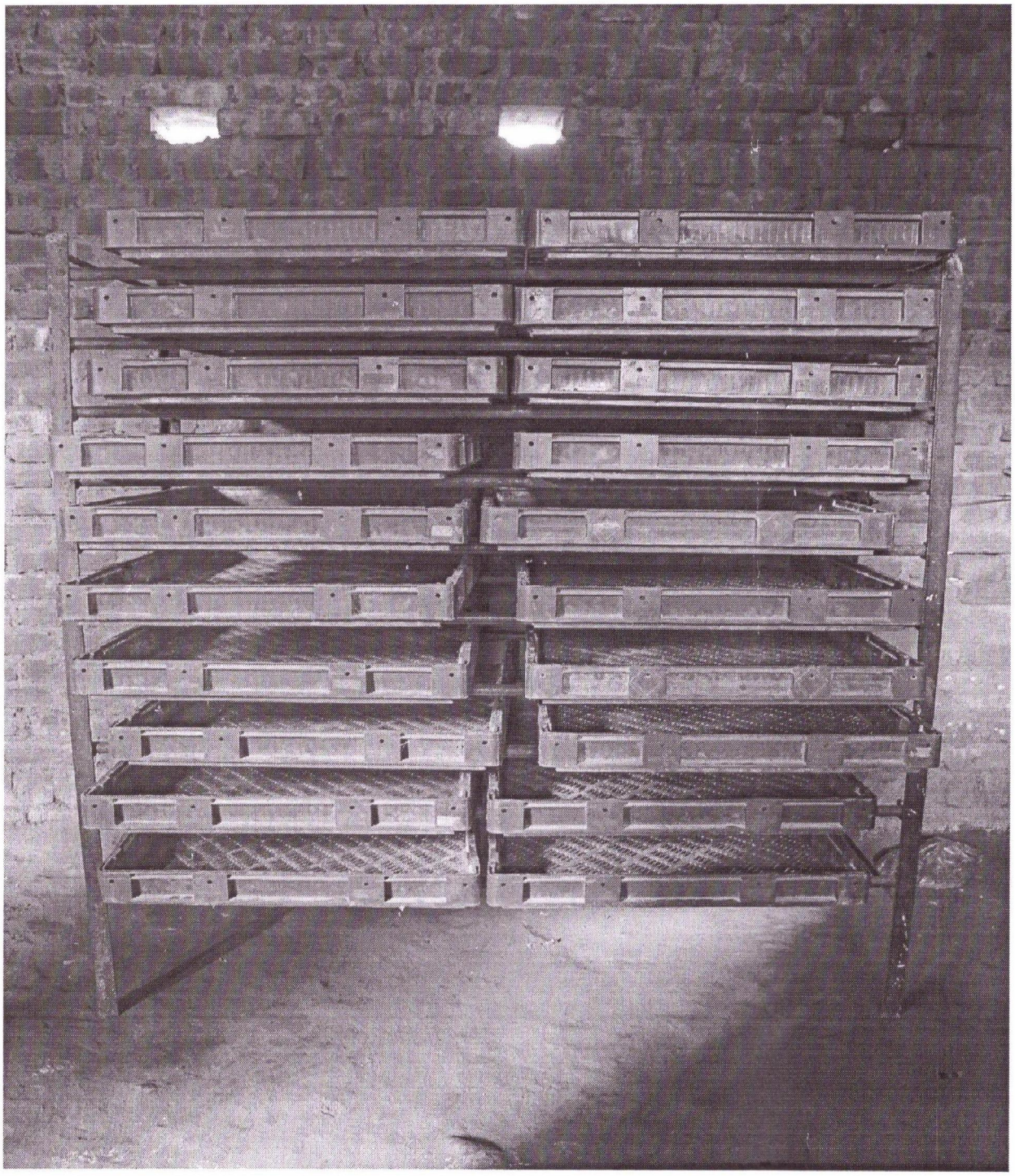

****